Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed)
Journal home page: www.jmsjournals.in, **ISSN: 2454-8367**
Vol. 11, Issue-I, July 2025

शेखावाटी क्षेत्र के झुंझुनूं जिले में बोयी जाने वाली प्रमुख फसलें : एक भौगोलिक अध्ययन

(Major Crops Grown in the Jhunjhunu District of the Shekhawati Region: A Geographical Study)

Kuldeep Kumar[a,*], **Dr. Mahesh Kumar**[b,**]

[a]*Ph.D. Scholar (Geography), Shri Khushal Das University, Hanumangarh, Rajasthan (India).*
[b]*Assistant professor (Geography), Shri Khushal Das University, Hanumangarh, Rajasthan (India).*

KEYWORDS

कृषि, फसल, उत्पादन, खाद्यान्न, अनाज, रबी, खरीब, शेखावाटी।

ABSTRACT

भारत एक कृषि प्रधान देश है, ऐतिहासिक काल से ही कृषि लोगों के जीवन का मुख्य एवं पारम्परिक आधार रहा है। देश के समस्त भू–भाग पर कृषि कार्य विशेष रूप से खाद्यान्न समस्या के परिप्रेक्ष्य से किया जाता रहा है। राजस्थान जो कि मरू भूमि के नाम से जाना जाता है, ऐतिहासिक काल से यह क्षेत्र खाद्यान्न समस्या से जुझता रहा है। खाद्यान्न संकट सम्पूर्ण राजस्थान की एक विकराल समस्या रही है। शेखावाटी क्षेत्र में भी मुख्यतः ग्रामीण परिवेश में कृषि कार्य खाद्यान्न संकट से निपटने तथा आजिविका का आधार रहा है। शेखावाटी क्षेत्र के झुंझुनूं जिले में मुख्यतः पारम्परिक तौर पर कृषि कार्य खाद्यान्न पूर्ति के प्ररिप्रेक्ष्य में किया जाता रहा है तथा इसके साथ–साथ ग्रमीण क्षेत्र में कृषि आजिविका की माध्यम रही है। मुख्यतः व्यापारिक उद्देश्य की बजाय ऐसी फसलों के उत्पादन पर जोर दिया जाता रहा है, जिससे लोगों की खाद्यान्न पूर्ति हो सके। समय के साथ–साथ कृषि क्षेत्र में बदलाव होने के कारण वर्तमान दौर में फसलों के उत्पादन में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। अब कृषि जगत केवल भोज्य फसलों के उत्पादन तक ही सीमित नही रहा है, बल्कि जीवन की अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आय के रूप में विभिन्न ऐसी फसलों के उत्पादन की ओर ध्यान केन्द्रित किया जाने लाग जिससे मुनाफा हो सके।

प्रस्तावना

राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र के जिला झुंझुनूं अपनी आन–बान व शान के लिए देश भर में जाना जाता है। हैं। मानव जीवन के लिए रोटी, कपड़ा और मकान मुलभूत आवश्कताऐं हैं, जिसकी पूर्ति के लिए मानव जीवन भर संघर्षरत रहता है। ''कृषि से पेट भरने, जीविकोपार्जन करने, अर्थ तन्त्र को सुदृढ़ करने तथा सामाजिक प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए ही आधार प्राप्त नहीं होता वरन् जीवन को प्रसन्नता से कृषि के सहारे जीने की कला भी प्राप्त होती है।''[1] शेखावाटी क्षेत्र के लोगों की पहचान मेहनती और स्वाभिमानी के रूप में रही है, यहाँ के लोग अपने जीवन यापन के लिए निरंतर संघर्षरत रहें हैं। मुलभूत आवश्यकता के रूप में रोटी जो कि कृषि कार्य से अनाज उत्पादन के जरिये प्राप्त होती है। जिले का भौगोलिक स्वरूप जो कि थार के मरूस्थल और अरावली पर्वतमाला से जुड़ा हुआ है। मिट्टी, जलवायु और जल की उपलब्धता के अनुकूल ही से फसलें उगाई जा सकती हैं, अतः झुंझुनूं क्षेत्र की भोगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल यहाँ पैदा होने वाली विविध फसलें क्षेत्रवार उगाई जाती हैं, जिसमें मुख्य रूप

Corresponding author
***E-mail:** kuldeepkumar6559@gmail.com (Kuldeep Kumar). https://orcid.org/0009-0002-5132-2686
DOI: https://doi.org/10.53724/jmsg/v11n1.02
Received 12th April 2025; Accepted 20th June 2025
Available online 30th July 2025
2454-8367/©2025 The Journal. Published by Jai Maa Saraswati Gyandayini e-Journal (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

से अनाज, दालें व सब्जियों का उत्पादन विशेष रूप से किया जाता है। खरीब, रबी व जायद तीनों प्रकार की पैदावार जिले में की जाती हैं। मोटे तौर पर बाजरा, गंवार, मुंग, मोठ, गेंहू, सरसों, जौ, चना, तम्बाकु व फल, सब्जियाँ इस क्षेत्र में मुख्य कृषि फसल उत्पादन किया जाता है।

शोध साहित्य समीक्षा :

- भाटी नारायण सिंह : शेखावाटी का भूगोल, 1960 – प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने शेखावाटी क्षेत्र के भोगौलिक स्वरूप, जलवायु, धरातलीय स्वरूप के साथ–साथ आर्थिक गतिविधियों व कृषिगत भूमि व फसलों का विवेचन इस पुस्तक में किया है।
- पेमाराम : शेखावाटी कृषक आन्दोलन का इतिहास, 2001 – लेखक के द्वारा इस साहित्यक ग्रन्थ में शेखावाटी क्षेत्र के किसानों की विविध समस्याओं पर विवेचन करते हुये, इस क्षेत्र में किसानों के द्वारा किये आन्दोलन के बारे में उल्लेख प्रस्तुत किया है।
- शेखावत सुरजन सिंह : शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास, 2014 – शेखावत सुरजन सिंह के द्वारा लिखित इस ग्रन्थ में मौलिक रूप से शेखावाटी क्षेत्र के इतिहास की जानकारी मिलती हैं, परंतु इतिहास के पन्नों में इस क्षेत्र के सामाजिक व आर्थिक जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है।
- बोयत शीषराम : शेखावाटी ठिकानों का आर्थिक इतिहास, शोध प्रबन्ध 2010 – प्रस्तुत शोध प्रबन्ध शेखावाटी क्षेत्र के विभिन्न ठिकानों की आर्थिक स्थिति से सम्बंधित है, शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में आर्थिक गतिविधियों में कुषि व कृषिजन्य कार्यो के बारे में भी विशेष रूप से शोध विश्लेषण किया है।
- सिंह शत्रुजीत : शेखावाटी का आर्थिक जीवन, शोध प्रबन्ध, 2006 – उक्त शोध प्रबन्ध में शोद्यार्थी के द्वारा शेखावाटी क्षेत्र में आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है, उक्त अध्ययन में कृषि क्षेत्र को मुख्य रूप से लोगों के जीवन के आधार रूप में प्रदर्शित किया गया है।
- शर्मा कालूराम : उन्नीसवीं सदी के राजस्थान का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन – प्रस्तुत ग्रन्थ में शर्मा के द्वारा राजस्थान के सामाजिक व आर्थिक जीवन के बारे में विस्तृत प्रकाश डाला गया है, इस पुस्तक में शेखावाटी क्षेत्र के बारे में भी आंशिक उल्लेख किया गया है।

शोध पत्र के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन पत्र के निम्न उद्देश्य हैं –

- शेखावाटी क्षेत्र में कृषि उत्पादन के बारे में जानना।
- कृषि कार्य की प्रकृति के बारे में मौलिक जानकारी को उजागर करना।
- शेखावाटी के झुंझुनूं जिले में बोयी जाने वाली फसलों की जानकारी प्रदान करना।
- कृषि क्षेत्र में विकास हेतु नवीन तकनीकों के बारे में जानना।
- पारम्परिक फसल उत्पादन के साथ–साथ अधिक पैदावार व लाभकारी फसलों के उत्पादन के प्रति जागरूकता प्रदान करना।

परिकल्पना :

भारत में पारम्परिक रूप से खेती का कार्य मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में आजिविका के आधार रूप में किया जाता रहा है। खेती–बाड़ी के इस कार्य में विविध स्तर पर फसलें भोगोलिक दृष्टि से क्षेत्रवार जलवायु के अनुकूल पैदा होने वाली फसलें ही बोयी जाती हैं। शेखावाटी क्षेत्र की शुष्क जलवायु होने के कारण इस क्षेत्र में केवल

उन्हीं फसलों का उत्पादन किया जाता है, जो शुष्क जलवायु में पैदा की जा सकती हैं।

शोध प्रविधि :

चयनित शोध अध्ययन पत्र लेखन के अन्तर्गत वैज्ञानिक अध्ययन पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। मुख्यतः शोध पत्र की प्रकृति के अनुसार ऐतिहासिक, पैनल, विश्लेषणात्मक व क्षेत्रीय अध्ययन पद्धतियों का प्रयोग किया गया हैं। अध्ययन में प्राथमिक व द्वितीय आंकडों का संकलन करने के लिए दोनों ही प्रकार के स्त्रोत व आंकड़े संग्रह करने के लिए दोनों विधियां प्रयुक्त की गई हैं।

चयनित अध्ययन क्षेत्र का परिचय :

प्रस्तुत अनुंसधान पत्र राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र के प्रमुख जिला झुंझुनूं में कृषि फसल उत्पादन के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है। झुंझुनूं जिला मरू प्रदेश राजस्थान के शेखावाटी अंचल में स्थित उतर–पूर्वी भाग पर स्थित है। जिले की स्थिति व अवस्थिति की दृष्टि से इसका विस्तार $27^0$38′ से $28^0$36′ उत्तरी अक्षांश एवं $75^0$02′ से $76^0$06′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य है, समुद्र तल से इसकी उंचाई 338 मीटर है। झुंझुनूं की उत्तरी सीमा हरियाणा राज्य से तथा उत्तर पूर्व में चूरू, दक्षिण में सीकर जिले, पूर्व में अलवर जिले से लगती है। ''जिले का कुल क्षेत्रफल 5,928 वर्ग किमी है तथा यह जिला प्रदेश के सबसे छोटे 10 जिलों में से एक है।''[2] अरावली श्रंखला से जुड़ा होने के साथ–साथ यह जिला थार के रेगिस्तान का भी हिस्सा है, अतः इस क्षेत्र की जलवायु सर्दी व गर्मी में विपरित दशाओं में देखी जा सकती है। सर्दियों में अत्यधिक ठण्ड तो गर्मियों में झुलसा देने वाली गर्मी का रोद्र रूप देखा जा सकता है। जिले में दक्षिण–पश्चिम मानसून से वर्षा होती है, जो कि औसत वार्षिक वर्षा लगभग 34 सेण्टीमीटर होती है। जिले में एकमात्र बरसाती नदी के रूप में कांटली नदी का प्रवाह पाया जाता है, जो वर्तमान में प्रायः विलुप्त हाने के कगार पर है। ''यहां पर वर्षा की अल्प मात्रा व सिंचाई के साधनों की कमी के उपरांत भी आजिविका का मुख्य साधन कृषि है।''[3] यह जिला भौतिक दृष्टि से तीन भागों में प्रथम उतर–पूर्वी व दक्षिण–पूर्वी भाग अरावली पर्वतीय भू–भाग, द्वितीय दक्षिण–पश्चिम असमतल पहाड़ी भाग, तृतीय उतर–पश्चिम मरूस्थलीय भू–भाग में विभक्त किया जाता है।

झुंझुनूं में बोयी जाने वाली प्रमुख फसलें :

शेखावाटी के इस जिले में कृषि मुख्यतः वर्षा आधारित है, क्योकि जिले में सिंचाई के साधनों का प्रायः अभाव है। एकमात्र नदी का बहाव इस क्षेत्र में है, जो केवल वर्षा ऋतु के समय में ही सीमित दायरे में बहती है। कुऐं ज्यादातर सिंचाई के माध्यम रहे हैं, लेकिन निरंतर घटते जल स्तर के कारण वर्तमान समय में सिंचाई तो दूर की बात है, पेयजल का ही संकट खड़ा हो चुका है। यद्यपि इस क्षेत्र में आंशिक रूप से सिंचाई से कृषि की जाती है, परंतु अधिकांश खेती वर्षा आधारित ही की जाती है। मुख्य रूप से खरीब व रबी की फसलें इस क्षेत्र में बोयी जाती हैं, जो इस क्षेत्र के लोगों की आजिविका का आधार हैं। जिले में बोयी जाने वाली प्रमुख फसलों को मुख्य रूप से खरीब और रबी के आधार पर वर्गीकृत कर विवेचन किया जाता है –

खरीब फसल –

खरीब की फसल मुख्यतः जून व जुलाई माह में बोयी जाती है, यह फसल पुर्णतः वर्षा पर आधारित होती है। मानसूनी बारिश के साथ ही किसानों के द्वारा खेती कार्य आरंभ कर दिया जाता है, जो कि फसल पकने तक अक्टुम्बर से नवम्बर माह तक चलता है। स्थानीय भाषा में खरीब की फसल देशी माह आषाढ व श्रावण माह से आषोज व कार्तिक महिने के मध्य की जाती है। जिले में इस मोसम में बोयी जाने वाली फसलें विभिन्न प्रकार की

हैं, जिममें तिलहन, दालें व ज्वार, बाजरा, ग्वांर, कपास, मिर्च आदि है। यह जिला जो कि जयपुर रियासत का भाग रहा है, ऐतिहासिक दस्तावेजों के मुताबिक ''जयपुर रियासत के अड्सठ्ठा दस्तावेजों में लगभग 37 खरीब की फसलों का विवरण मिलता है।''[4] वर्तमान में बोयी जाने वाली प्रमुख खरीब फसले निम्न हैं –

1. **बाजरा** – बाजरा राजस्थान में सबसे अधिक क्षेत्र में बोया जाने वाला अनाज है। साधारणतया बाजरा पश्चिमी राजस्थान में प्रमुख खाद्यान्न फसल है, जो कि भरपूर मात्रा में पोष्टिक अनाज है। शेखावाटी के सम्पूर्ण क्षेत्र में बाजरे की खेती की जाती है। खाद्यान्न के साथ–साथ ये पशुओं के चारे के रूप में भी प्रयुक्त होता है, स्थानीय भाषा में चारे के रूप में बाजरे को कड़बी के नाम से जाना जाता है।
2. **ज्वांर** – बाजरे की भांति ज्वांर का उत्पाद शेखावाटी क्षेत्र में किया जाता है, यद्यपि ज्वांर का उत्पादन सम्पूर्ण शेखावाटी क्षेत्र में नही किया जाता है। अरावली श्रंखला की तलहटी खेतड़ी व सिंघाना क्षेत्र में इसका उत्पादन किया जाता रहा है। ''शेखावाटी में ज्वांर बबाई व सिंघाना क्षेत्रों में ज्यादा होती थी।''[5] बाजरे की भांति ज्वांर पशुओं के चारे के रूप में उतम व पोष्टिक आहार के रूप में प्रयुक्त होने वाली फसल है।
3. **उड़द** – उड़द प्रमुख दालों में से एक है, इसका उत्पादन भी शेखावाटी क्षेत्र में कोटपूतली व खेतड़ी क्षेत्र में किया जाता रहा है।
4. **मुंग व मोठ** – मुख्य दलहन के रूप में मुंग व मोठ लोकप्रिय व पोष्टिक दाल के रूप में सम्पूर्ण भारत में मुख्य आहार है। मुंग की खेती सम्पूर्ण राजस्थान में की जाती है, मुगं को बाजरे के साथ मिश्रित खेती के रूप में बोया जाता है, लेकिन वर्तमान में सुविधानुसार अलग भी बोया जाने लगा है। मुंग इस क्षेत्र में खरीब की फसलों में किसानों की आय के रूप में बोयी जाने वाली फसल मानी जाती है। मुंग व मोठ शेखावाटी के सम्पूर्ण भू–भाग में बोया जाता है तथा इसकी पैदावर भी अच्छी होती है।
5. **ग्वांर** –ग्वांर का उत्पादन शेखावाटी क्षेत्र में बहुतायत तौर पर किया जाता है। किसानों के लिए यह फसल भी आमदनी के तौर पर मुख्य फसल है। ग्वांर की फलियां सब्जी के लिए उतम व स्वादिष्ट मानी जाती है, जिसे बाजार में सहज रूप से बेचा जाता है तथा पशुओं के चारे के रूप में भी यह उपयोगी है। ग्वांर की मांग कई बार विदेशों में अधिक होने पर इसकी अच्छी कीमत किसानों मिल जाती है।
6. **मिर्च** – मिर्च नगदी फसल के तौर पर बोयी जाती है, शेखावाटी क्षेत्र में इसका उत्पादन उदयपुरवाटी, सिंघाना व अन्य सभी क्षेत्रों में किया जाता है।
7. **प्याज** – प्याज का उत्पादन भी शेखावाटी क्षेत्र में विशेष तौर पर किया जाता है। शेखावाटी क्षेत्र का प्याज बहुत ही स्वादिष्ट माना जाता है, इसका उत्पादन आमद फसल के तौर पर किया जाता है।
8. अन्य – अन्य फसलों में चौला, तिल, मुंगफली सम्पूर्ण शेखावाटी तथा गन्ना खेतड़ी व सिंघाना क्षेत्र में बोया जाता रहा है।

रबी की फसल :

सर्दियों के मौसम में तैयार होने वाली फसल जो कि अक्टूम्बर से नवम्बर माह में बोयी जाती हैं, रबी की फसल कहलाती है, स्थानीय भाषा में इसे उनालू फसल के नाम से जाना जाता है। रबी की फसल

मुख्यतः सिंचाई पर आधारित होती हैं, अतः इसका उत्पादन जिले के सम्पूर्ण भाग में सहज रूप से नहीं होता है। यद्यपि बारिश होने की स्थिति में चना, तारामीरा व महीन सरसों (मोडली सरसों स्थानीय भाषा में) का उत्पादन किया जा सकता है। रबी की फसलों में मुख्य रूप से निम्न फसलें झुंझुनूं जिले में बोयी जाती हैं –

1. **गेंहूँ** – रबी की फसल में गेंहूँ सबसे प्रमुख खाद्यान्न फसल है, यह कार्तिक माह में बोयी जाती है। गेंहूँ की पैदावार के लिए विशेष रूप से सिंचाई की जरूरत होती है, अतः शेखावाटी क्षेत्र में इसका उत्पादन बहुतायत तौर पर सिंचाई के पानी की उपलब्धता के अभाव में नहीं किया जाता है। झुंझुनूं जिले की खेतड़ी, सिंघाना, उदयपुरवाटी व चिड़ावा तहसील क्षेत्र में इसका उत्पादन विशेष रूप से कुओं से सिंचाई करके किया जाता रहा है, परंतु जल स्तर गिरने के कारण अब इसकी पैदावार में खासी कमी हो गई है।
2. **सरसों** – सरसों की खेती गेंहूँ की फसल से कम सिंचाई में पैदा होती है, इसलिए सरसों की पैदावार बहुतायत तौर पर जिले के सिंचित होने वाले भू–भाग में विशेष रूप से की जाती है। यद्यपि गेंहूँ की भांति सरसों की पैदावार में भी हाल ही के वर्षों में कमी आयी है।
3. **जौ** – गेंहूँ से मिलती–जुलती फसल जौ के रूप में होती है, जौ कम समय व कम सिंचाई में पैदा होने वाली फसल है। जौ का उत्पादन शेखावाटी क्षेत्र में विशेष रूप से किया जाता है, जौ को आमद फसल के साथ–साथ पशुओं के लिए हरे व सुखे चारे के लिए उपयोगी माना जाता है।
4. **चना** – शेखावाटी क्षेत्र में रबी के मौसम में चना विशेष तौर पर बोया जाता है। कार्तिक माह में होने वाली हल्की बारिस से भी चने की पैदावार सम्भव है, जनवरी माह के आसपास होने वाली हल्की बारिश जिसे मावठ के नाम से जाना जाता है। मावठ होने की स्थिति में चने की पैदावार बिना सिंचाई के भी अच्छी हो जाती है। अतः चना शेखावाटी क्षेत्र के समस्त भाग में बोया जाता है।
5. **तम्बाकू** – तम्बाकू की पैदावार भी शेखावाटी क्षेत्र में सीमित रूप में की जाती है। विशेष तौर पर सिंचित क्षेत्र में इसका उत्पादन किया जाता है। हुक्के, चिलम व बीड़ी में प्रयुक्त की जाने वाली यह फसल नगदी फसल के रूप में मानी जाती है। ''राजस्थान में यह अधिकतर अलवर, झुंझुनूं, करौली, सवाईमाधोपुर, चितौड़गढ, दौसा, जयपुर, नागौर, राजसमंद तथा उदयपुर में बोई जाती है।''[6]
6. **अन्य** – रबी की फसलों में शेखावाटी क्षेत्र में राई, मैथी व सब्जियों में गाजर, मूली, गोभी, पालक, बैंगन आदि की भी पैदावार की जाती है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में स्पष्ट है कि शेखावाटी क्षेत्र में रबी व खरीब दोनों ही फसलों का उत्पादन क्षेत्र की भोगोलिक दशाओं के अनुकूल किया जाता है। क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा पर्याप्त मात्रा में नहीं होने के बावजूद भी अनेकों फसले उगाई जाती रही हैं। खेती–बाड़ी प्रमुख आय का माध्यम होने के कारण यहाँ के किसानों द्वारा विशेष रूप से रबी के मौसम में कम सिंचाई से तैयार होने वाली फसले बोयी जाती हैं। खरीब की फसल मुख्यतः वर्षा पर निर्भर होने के कारण वर्षा होने की स्थिति में ही बोयी जाती है। सामान्यतः झुंझुनूं क्षेत्र में जून–जुलाई माह में

मानसूनी बारिस हो जाती है, जिससे इस क्षेत्र में अधिकांश भू–भाग फसलों से लहलाने लगता है, श्रावण मास में चारों और हरियाली की सुनहरी परत इस मरूधरा को मनमोहक स्वरूप प्रदान करती है। रबी की फसल के दौरान भी इस क्षेत्र में विभिन्न फसलों का उत्पादन किया जाता है, मावठ होने की स्थिति में तो विशेष रूप से बम्पर पैदावार होती है। निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र की भूमि कॉफी उपजाऊ है, बस समस्या केवल सिंचाई के जल की प्रचुरता की कमी ही आड़े आती है। क्षेत्र के किसान भी बेहद ही मेहनती और कर्मठ हैं, यदि सरकार द्वारा इस क्षेत्र में सिंचाई के लिए नहर परियोजना के लिए प्रयास कर यदि उचित दिशा प्रदान कर दी जाये तो यह क्षेत्र अनाज व अन्य फसल उत्पादन में राजस्थान में सिरमोर साबित हो सकता है।

सन्दर्भ सूची

[1] शर्मा प्रो. एच.एस. व डॉ. एम.एल. : राजस्थान का भुगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ.स. 137

[2] गुप्ता डॉ. मोहनलाल : जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रन्थगार, जोधपुर, पृ.स. 226

[3] मास्टर प्लान झुंझुनूं 2011–2031, नगर नियोजन विभाग राजस्थान, सरकार, पृ. स. 09

[4] राजस्थान अभिलेखागार, बीकानेर, जयपुर रिकार्डस दस्तावेज न. j –2–2549, भ्र –1 पृ.स. 23–34

[5] बोयत शीषराम, शेखावाटी ठिकानों का आर्थिक इतिहास, शोध प्रबंध पृ.स. 123–124

[6] भल्ला डॉ. एल.आर. – राजस्थान का भूगोल,कुलदीप पब्लिशिंग हाउस,जयपुर पृ.स. 76